४८: राष्ट्र में पूर्णता

दिनांक -७/१/२०१२

राष्ट्र में पूर्णता कुशलता, निपुणता, पांडित्य ही है | निपुणता का स्वरूप प्राकृतिक ऐश्वर्य पर श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता मूल्य को स्थापित करना है | कुशलता का तात्पर्य उपयोगिता मूल्य के साथ सुंदरता मूल्य को स्थापित करना है | पांडित्य का तात्पर्य श्रम नियोजन, श्रम मूल्य का मूल्यांकन करना है | इन तीनों भागों में पंडित व्यक्ति ही निर्दोष व्यक्ति एवं न्यायपूर्वक जीने वाला व्यक्ति होता है | अभी तक न्यायपूर्वक जीने वाला व्यक्ति बना नहीं | भौतिकवादी विधि से सुविधा, संग्रह लक्ष्य होने के आधार पर प्रयत्न किया है | जितना भी अपराध किया लेकिन सुविधा, संग्रह पूरा हुआ नहीं | इस बीच धरती बीमार हो गयी तब पुनः विचार का शुरुआत यहाँ से हुआ | ऐसे सूझ बूझ के आधार पर विकसित चेतना ही एकमात्र रास्ता मिला | विकसित चेतना ही मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना रूप में प्रमाणित होता है | इसे भली प्रकार से जाँचा है, जिया है, प्रमाणित किया है | इस क्रम में यह पता लगा है कि निर्दोष आदमी कैसा होगा | इसके आधार पर निष्कर्ष निकला कि व्यवहारमूलक विधि से प्रमाणित होना, विचारमूलक विधि से प्रमाणित होना, अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होना, यह तीनों विधियाँ हर मानव के साथ जुड़ा है | यह हर देश काल में है | यही विकसित चेतना विधा में तीनों चेतनाओं का क्रम है | अतएव मानव जात चेतना विकास मूल्य शिक्षा के लिये बाध्य हुआ | ऐसी शिक्षा के बिना निर्दोष आदमी का जन्म होना, मृत्यु पर्यंत निर्वाह करना काफी असम्भव दिखता है | कोई होता भी होगा लेकिन प्रमाणित अभी तक नहीं हुआ | इन सभी घटनाओं को ध्यान में रखते हुए विकल्पात्मक विधि से अर्थात अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन विधि से चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रस्तावित होना स्वाभाविक रहा | इसे प्रस्तुत करने में भले ही कुछ समय लगा हो लेकिन कोई खास बात नहीं रहा है |

आज की स्थिति में चेतना विकास मूल्य शिक्षा कितना आवश्यक है, इस मुद्दे पर बातचीत हो सकती है | सारा बातचीत विचारानुक्रम से है | सारा बातचीत अनुभव के आधार पर है | अनुभव सत्तामयता में सम्पृक्त जड, चैतन्य प्रकृति ही है | इसे भली प्रकार से जाँचा है, समझा है, प्रमाणित किया है | इसे प्रस्तुत करने में विकल्प ही बना, क्योंकि आदर्शवादी परम्परा, भौतिकवादी परम्परा, अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन को प्रस्तुत नहीं कर पाया | इसी कारणवश विकल्प होना सहज रहा | सदा से मानव शुभ चाहता ही है | अर्वाचीन काल से आधुनिक समय तक मानव ने व्यक्तिगत एवं समुदायगत विधि से ही सोचा है | सर्वशुभ का चाहत का पहल दिखता नहीं | अब सर्वशुभ का चाहत बन चुकी है | इसी कारणवश चेतना विकास मूल्य शिक्षा रुपी को मानव सम्मुख प्रस्तुत किया है | इसे अध्ययन विधि से ही आत्मसात कर सकते हैं | अध्ययन के लिए विकसित चेतना सहज ज्ञान एवं आचरण के लिए वांडमय पूरा चाहिए | दूसरा कोई विधि नहीं है | दूसरा विधि अनुसंधान हो सकता है | अनुसंधान के लिये परंपरा से भिन्न अज्ञात को ज्ञात करने का लक्ष्य चाहिए | यह भी जी कर देखा है |

इन दोनों विधियों में से अध्ययन विधि जलदी लोकगम्य होता है | इस क्रम में मानव अपने मर्यादाओं को पहचानने के लिये सच्चाई एकमात्र रास्ता है | यह भी सुनने में आता है कि माध्यमों ने अर्थात प्रचार माध्यमों ने सच्चाई के साथ जीने के ऊपर प्रश्नचिह्न लगाया है | सच्चाई अभी तक स्पष्ट नहीं हुई | मेरे अनुसार सच्चाई का पुरजोर आदर्शवाद ने किया है | असफल होने के बाद भौतिकवाद में मानव समाहित हो गया | भौतिकवादी विधि से सुविधा, संग्रह ही अंतिम मंजिल बना है | इसमें सफलता अर्थात तृप्ति बिंदु अभी तक किसी को नहीं मिला | लोकोक्तियों में हजारपति से शुरू होकर अरब, खरबपति तक हो चुका है |

अब कितना खर्च करना चाहते हैं तय नहीं हुआ | यह अरब, खरबपति प्रतीकात्मक मुद्रा पर बैठा है | प्रतीक केवल पत्र मुद्रा के अर्थ में है | इसे जाँचने पर पता चला कि प्रतीक प्राप्ति नहीं है, उपमा उपलब्धि नहीं है | इस प्रकार प्रतीक पर आधारित भ्रम में कितना भी दूर चलें, कितना भी हाथ पैर मारें, सफलता नहीं मिलना,यही तात्पर्य है | इसी के साथ धरती बीमार हो गयी, प्रदूषण छा गया, मानव में अपराध प्रवृत्तियां बलवती हो गयीं, यह आंकलित हुआ | इसका प्रमाण स्वरूप यही है कि व्यापार और नौकरी, यह केवल लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद के आधार पर स्थापित है अथवा प्रभावशील है | दूसरा भाग युद्ध और संघर्ष के ऊपर बैठा है | इस प्रकार व्यापार, नौकरी और सामरिक तन्त्र पर सभी मानव का रुझान हो चुका है अथवा सर्वाधिक मानव का रुझान हो चुका है, सहमति सभी का है | इस प्रकार मानव कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित विधियों से अपराधिक होना पाया गया है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)